TECHE UDINE

# MANOSCRITTI

# FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4339**

*Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.*

Collocazione:

**Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine**
*https://www.techeudine.it/fondo-principale*
*https://www.sbhu.it/*

॥ ४ ॥ पणमिय पासजिणंदं वंदं निम्मलगुणधारणं इंदनाण संघवणा लसिरि समणाण निवारण नाणकी कुसिमिहीवमिहि सुरसुरस्क निवाजलइ नाणतलीवोदगा करियाइ रंत
रिवालइ ॥ २ ॥ एइ मनाण अमवासि जे य इंमिणमा इ पयाभिय [illegible] पियं [illegible] मिदि सक्वदिनणठके य [illegible] मणकवइ किमा ॥ जे वयणुसियं [illegible] नाणकेव
लगवनिठ ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सयल अगमादि सुय नाणसुणं मिह [illegible] इ सुगणराजि संवासि सुपमरुत ॥ एव पदिण दिन [illegible] समवलरा वि ॥ ३ ॥ अणदस मखण [illegible] परिनावडे
॥ एपिणि घरिकिव इणक पामदेसण छिणि मवरं गंभीर धम्मण नवियणाडेणि ॥ करकउ [illegible] ॥ ४ ॥ वक्क ॥ नाणाई
विमिवनणउ नवएद ॥ नविसयणउप्प सउणमरदाधर उपरपरमि त्रियमणिणाथिवियवकिकरहे ॥ एचक्किमवला रह ॥ [illegible] ने नाणवसुम [illegible] करइ
नयरुपसंसमनाण वलि [illegible] संवारलरेइ ॥ ५ ॥ वास ॥ एवं वरसपंचमास [illegible] रितपझरी उप्पन्न ॥ मानो मनरुवइ यारु वित्रिमइ [illegible] ॥ ६ ॥ नाणदह [illegible] कीकइ ॥ उवस्वा
मिधरी कइ ॥ नंदनरी कीवदीकड ॥ उसक [illegible] मविन्न [illegible] अलास ॥ पदित्तवन्नाणमयपयरिकाण ॥ [illegible] स्कवर समण वरकाण ॥ [illegible] अमनिवारि [illegible] परिमामी
यदिणवरसामइ ॥ मक्कायरवालि [illegible] विद्यणउल्ला सउन्ना मइस चिमिनि [illegible] दीपोषीनयरववलारी ॥ उपमा ली नि इममन्नसुमारी ॥ कामी साव यहाण [illegible] मकेना
एव करी ॥ नाण वृहिते इलइ अभिकेरी [illegible] मइसासयठमण ॥ ७ ॥ वास ॥ करिनप ऊडामणउ करइ प ॥ उवारणमवन्ना गालिधरइ ॥ ॥ आस ॥ यामसविपरिदर सपदअ [illegible]
रसुमक्क चरइ ॥ ८ ॥ पादप इसुमसुविनलउप निरंतीपरिवावइसुणनिज उपलविनविनिरमलमनि लइ इप [illegible] परिसुनिवरवकुसुयकयइ ॥ ११ ॥ समसा लमप्प
फीवकडनाणविण सूरि काल मवंत अमइ ॥ डः रववे यणकरा ला करीमा दरीसार दिवस फल कीकइ ॥ ३ ॥ लाणमसुपसायकरिनाणदीकइ ॥ १३ ॥ जिममोर [illegible]
गमणिनावइ उहदरसमणदोषितिमनविवयणा वधत्तमभ्रमनविणगमानसंतान वाधइ सवे सेव वंतो सा दिलाकाकसाधइ ॥ १४ ॥ [illegible] पंच पिझाणारसिमपत पंतन
वसार लाव विधि डेऊ पंत [illegible] रिकेतनलीसेवावकंति ॥ तेनवमा यरइ अरतरंति ॥ १४ ॥ इणे ग नायकदायकसुरकरा सिक्को लीणव सामी ॥ उप्पणासि [illegible] तिमयउ
गामासि निवास पास [illegible] रमसर पूरइ कविहसमास ॥ १५ ॥ इय फणिय हेमलमकमदनपासनादक्कि णसरो ॥ सिसिणाण पंचविदिवसि सुक्किय नमिय अमरनरेस ॥
[illegible] नावंदइ ते दंनट इरिद्धि सिद्धि सबकपरघ [illegible] अमरा रुमुत्ति दइउंघ इसिद्धि पामइसुदलरइ ॥ १६ ॥ इति श्रीनाणपंचमी स्तवनं समाप्तं ॥ ढाल मंग लकमला
वी ॥ पासजिणसेवज गतिलाप गा ॥ ९ ॥ पुरमंकणु निलाव ॥ नवनकुमिसंभनुना हरी ए मनवंछित मुरामा हरी ए ॥ १ ॥ नेरीनामवणारसीए सुरन
गरी ॥ जणरियहसीए तेणपुरीवदीपतीए ॥ असमनरा नारि सुजीय तो ए ॥ २५ ॥ वांमा नमुधरि नारए नसुसुणहि नेलानेपा रए नसु उपरि चवुला
रए नसु अनि मंसूपउ दोरए ॥ ३ ॥ वो समु पुनतिलिनि सिलदाए अनुकमि कमतेमविमननलहा ए ॥ वे नपरमिन कहाए कुवना कि कहाजो जे
मलनाए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ प्रभुमसुपनगजोनरवा मायतलीमनहरवा ॥ वीजो वृषभनउदार धरलीजिलधरा नार ॥ ५ ॥ नीजा सीहपरधानव
सुवलकोइनमान ॥ वोथे लक्ष्मीदेवी कमलवसुसुरसेवी ॥ ६ ॥ पांचमे पुफनी माल पंचवर्णसोवे सालमहि हीवी एवंद महगणा करी प 1

इंद॥१३॥ सा लमै सुरजसार: इरवीवो अंधकार: आ नमै थलाजहकेनी: नरण विचित्र मांदंती॥ ना नयू मेघरस कंन: नरीयोनि
ढूंढस रमल श्रम: दृषिमरीवृरदृसमे: मनदषुवो अतिविसमे॥१४॥ समुइ इणपारमै कांमे: क्षीरजलक्षिजसु नांमे: व्यारमदेवविमान: बलि
नर्न नेघ निर्गीतगान॥१५॥ अतेरमेरतननी रास: दहदिसिजास तिमकासि: सुपनवदमैं पदीग: पावकधूमबीनी गो॥१६॥ सुपनकहस्स
विचार: दरखो नृपउदार: पुत्ररतनहासे सुपाव: माइमाडदेअमहार॥१७॥ इल्ला॥ चवदसुपनश्रवणसुणी: हरष्यती यासुविचार: सु
दरसुतउदेजनमस्यो: कुलदीपकश्रीकीर॥१८॥ वामा प्रीतमवयनसुणि: आवीमंदरठाहे: देवसुगरकीरतकवी: जन्मकयी याँ
सुकीनहल॥१९॥ इम अनुक्रम उगम्यो दिवस: कीधासुपनविचार: तधीरपढ्यावा आपेला: दीधादान अपार॥२०॥ डाल॥ दिवउन मार
कगुरुजगत्रउड्डेजुवकार: विणक्कनारकोपपावी सुषपचार: दिविक्कमुरीभ्रिमिकारे सत्रककरम निसकीध: करिवाविकप
दवीवतितमेहनोसीध॥२१॥ नितहीजनिसिवासवइ इमिलीतिदां आवे: लेई निज अमरि सुरगिरस्यात्रकरावे: करिजन्मम
हो छवउण सोमासे ठावे: सिहावी सुरसवि मिलि दीपनंदीसरठावे॥२२॥ इम रयण विहाणी उगो दिवसउदार: घरिघरि
इंजेकीने मंगलव्यार: इणपारम दिवसेमिली सकुपरिवार: तसुनाम दीधो श्रीवामापाससुजिमार॥२३॥ अनुवाधैदिनरकलाइ
कदीजिम चंद: त्रिकुन्यानविरांजित रूपाजिसा देविदं: गुणकजीविचहुंणाविद्यानृपानिधिमान: योवनवय आयो परणावीय
त्र माण॥२४॥ ढाल॥४॥ कमठपदपसुरदतीकालसुषगमैंप: आयोमनवरागसयमलवासमैप: तबलोगतियदेवजणावे आ
ससृप। देईसंवछरीदान धावकजनेसुषकरूप॥२५॥ सामीसयमलेयइ इउदिक्कसनमिल्याप: देसविदेसविहारकरीकमे
नरटल्याप सामीकेवलन्यानसुरेमहिमाकरीप: भवियणनेविहसिषघमुगतिरमणीवरीप॥२६॥ ढालपमी॥ इमश्रीगोडीपा
सनणागुणजेनरगाय: तेनरनारी इहपरलोगसवाछितपावे: सिघकुरीसिंघपति जिकगोडी प्रभुआवे: वोरधाडइसकट
टलेववघनविहारनेयावे॥२७॥ घरणराय पाभावसुजासवदेसिरआण सांमलितरणसुसोनितनवकरकायप्रमाण
कलपवृक्षचिंतामणिकामगवीसुरनोधे: श्रीगुणतिपरसीसरमैंयरमइणपरिवालो॥२८॥ इति श्री गोडीपार्श्वनाथस्त
स्तवनं॥